उपेन्द्रनाथ अश्क

प्राक्कथन

— प्राक्कथन —

==========

आधुनिक हिन्दी साहित्य की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने की दृष्टि से श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। इसी तरह कहानी का प्रवाह भी अबाध गति से बढता रहा। उसमें जीवन की वास्तविकता का प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होने लगा। नारी मनुष्य के जीवन की अर्धांगिनी है। प्राचीन काल में उसे देवी के रुप में प्रतिष्ठित किया गया था, लेकिन बीच में उसे अपने पद से हटाया गया और उसे एक उपेक्षित, असहाय तथा दासी का जीवन व्यतीत करना पडा। उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपने साहित्य में नारी के इस उपेक्षित, पीडित जीवन का चित्रण कर, नारी की दयनीय अवस्था की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। उनकी अनेक कहानियाँ इस बात का ज्वलंत उदाहरण हैं।

एक अध्यापक तथा हिन्दी साहित्य प्रेमी होने के कारण उपेन्द्रनाथ अश्क जी के नाटक तथा कहानी साहित्य पढने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। उनकी कहानियों में नारी जीवन का जो सूक्ष्म तथा यथार्थ चित्रण है, उसने मुझे सोचने को बाध्य किया और मैं अपने लघु शोध-प्रबंध के लिए यही विषय चुनने को उद्यत हो गयी।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने समाज के मध्यवर्ग तथा निम्न-मध्यवर्ग का सूक्ष्म निरीक्षण एवं यथार्थ जीवनानुभव लेकर हिन्दी कहानी क्षेत्र में पदार्पण किया। उनमें निम्न-मध्यवर्ग की जीवन-रीति, विचार एवं विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं और उनके प्रभावों को परखने की अपूर्व क्षमता है। जीवन के घात-प्रतिघातों से जूझते हुए उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को गहराई से देखा,

परखा है। इस प्रयास में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक धरातल पर नारी को देखने की उन्होंने चेष्टा की। वास्तव में नारी समाज का एक प्रमुख अंग होते हुए भी वह उपेक्षित, निरादृत हो गयी थी। उपेन्द्रनाथ अश्कजी ने नारी जीवन के इन सभी पहलूओं पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

उपेन्द्रनाथ अश्क नारी के भाव-विश्व से अच्छी तरह परिचित हैं। सामाजिक कुप्रथाएँ, कुसंस्कार तथा कुण्ठाओं का चित्रण करते समय समाज जीवन का एक प्रमुख अंग - नारी के दु:ख पीडा से वे उद्वेलित हुए। अत: आपने अपनी कहानियों में नारी के उन रुपों का चित्रण किया है, जो जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में दिखाई देता है। नारी के इन भिन्न-भिन्न रुपों को मद्दे नजर रखते हुए मैं ने उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों में चित्रित नारी जीवन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस के लिए मैं नें अश्कजी की कहानियों में से ऐसी कुछ प्रातिनिधिक कहानियाँ चुनीं, जिन में नारी जीवन का प्रधान रुप से चित्रण हुआ है।

प्रबन्ध के प्रारम्भ में मेरे मन में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे, वे निम्न प्रकार के थे -

१) अश्क की कहानियों में किस प्रकार के नारी पात्र हैं ?

२) अश्क ने अपनी कहानियों में नारी पात्रों की किन विशेषताओं को चित्रित किया हैं ?

३) अश्कजी का नारी के प्रति दृष्टिकोण क्या है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैं ने अश्कजी की प्रातिनिधिक कहानियों के नारी पात्रों का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित है । --

प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम उपेन्द्रनाथ अश्क का जीवन परिचय दिया है। इस सन्दर्भ में अश्क के व्यक्तित्व, बचपन, शिक्षा, विवाह, जीवनसंघर्ष एवं पुरस्कार-अभिनंदन आदि उपशीर्षकों के अन्तर्गत उनका सम्यक् परिचय देने की चेष्टा की है। साथ ही उनकी साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए उनकी विविधगामी साहित्य रचनाओं पर प्रकाश डाला है। अश्क के व्यक्तित्व के कहानीकार, नाटककार, एकांकीकार, कवि जैसे विभिन्न अंगों को अलग अलग उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत कर उन के तत्संबंधी साहित्यकृतियों का संक्षेप में विवेचन किया है।

द्वितीय अध्याय में अश्क की कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। इस में अश्क के एक एक कहानीसंग्रह के विवेचन के अन्तर्गत कहानीसंग्रह का प्रकाशन वर्ष, प्रकाशक के नाम के साथ साथ उसमें संकलित प्रत्येक कहानी का कथ्य और उसकी विशेषताओं को भी देखने की कोशिश की है।

तृतीय अध्याय - उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कहानियों में चित्रित नारी जीवन, इस प्रबंध का मेरुदण्ड है। इस अध्याय में पहले नारी जीवन के विविध आयाम, नारी जीवन की विविध अवस्थाएँ, उनमें नारी की स्थिति तथा पुरुष प्रधान संस्कृति में केवल नारी पर ही डाले गये बंधन आदि का विवेचन है। नारी जीवन की विविध समस्याओं की भी चर्चा इसमें की गई है।

इस अध्याय में अश्क की ऐसी कहानियों में चित्रित नारी जीवन का विवेचन किया गया है, जिनमें नारी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। इसमें अश्क की कहानियों के प्रधान नारी-पात्र, उनके जीवन की विभिन्न अवस्थाएं, उनकी उलझनें, उनकी व्यक्तिगत समस्याएं, मानसिक यातनाएं, अकेलेपन की घुटन आदि का विश्लेषण किया है। इन नारी पात्रों की विविध समस्याओं का, उनकी स्थिति का यथार्थवादी धरातल पर अंकन किया है। इस अध्याय में नारी के सभी रुपों की चर्चा

करने का प्रयास किया है। नारी के संदर्भ में आधुनिक परिवर्तनशील मूल्यों का चित्रण भी सामाजिक यथार्थवादी धरातल पर किया गया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रातिनिधिक कहानियों में चित्रित नारी जीवन का स्वरुप और समस्याएं आदि विषयों पर सोचने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे, उन्हें उपसंहार में सार के रुप में रखा है। अश्क का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण है, यह भी व्यंजित किया है।

उपसंहार के बाद परिशिष्ट है, जिसमें उपेन्द्रनाथ अश्क का प्रकाशित साहित्य, प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार समग्र रुप में प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध-प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची जोड दी है, जो मुझे इस शोध-कार्य के सिलसिले में विशेष सहायक सिध्द हुई।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डा. के. पी. शहा जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया, इसके लिए मैं आपकी अत्यधिक ऋणी हूँ।

गुरुवर्य डा. व्ही. के. मोरे, डा. व्ही. व्ही. द्रविड, प्रा. एस. बी. कणबरकर, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले. प्रा. श्रीमती भागवत जी के प्रति भी मैं सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

हमारी संस्था के अध्यक्ष और प्राचार्य की भी मैं आभारी हूँ। गुरुवर्य डा. एम. एस. हसमनीस (शिराला) तथा हमेशा मेरा उत्साह बढानेवाली मेरी सहेली सौ. पुष्पा पाटील की भी मैं हार्दिक आभारी रहूँगी।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल, पदाधिकारी तथा शफीक देसाई जी की सहायता के प्रति मैं उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

जिनके स्नेहमयी आशीर्वाद सदा मेरे साथ रहें, वे मेरे पूज्यवर माता-पिता, जिनके सहयोग के बिना यह शोध-कार्य असम्भव था, वे मेरे पति प्रा. के. आर. पठाण और मेरे अपने बच्चे, इन सब की मैं हार्दिक ऋणी रहूँगी।

इस शोध-प्रबन्ध का संगणक-टंकलेखन का काम श्री. आर. एस. पाटील (इस्लाम्पुर) जी ने अति-शीघ्र और सुचारु रुप से पूर्ण किया, इनके प्रति भी मैं धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

इस प्रकार प्रबन्ध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैं नें प्रयास किया है। इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी परितोष हुआ, तो मैं अपने इस शोध-कार्य को सार्थक समझूंगी।

कोल्हापुर

दिनांक : २७.११.९२

आपकी कृपाप्रार्थी,

(प्रा. शाकीरा न. मुल्ला)